# टूटते परिवार

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,**

**पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार प्रथा एक विशेषता है। यह प्रथा बहुत प्राचीनकाल से चली आ रही है। परिवार के सभी सदस्य एक साथ एक छत के नीचे जीवनयापन करते है। सब एक साथ रहते है। सबमें एकता बनी रहती है। सामूहिक परिवार का सबसे बड़ा लाभ यह है कि कोई भी कार्य हो सबके सहयोग से शीघ्र हो जाता है। लकड़ी का एक गट्ठर बना दिया जाये तो उसको कोई तोड़ नहीं सकता। लेकिन उसको एक–एक कर अलग कर दिया जाये तो उसको आसानी से तोड़ा जा सकता है। परिवार के ऊपर भी यह सूत्र लागू होता है। अलग–अलग रहने पर कोई भी पराजित कर सकता है किन्तु एक साथ रहने पर कोई भी परिवार से विवाद नहीं कर सकता है। संयुक्त परिवार में दादा–दादी, माता–पिता, चाचा–चाची, बुआ, भाई, बहन, नाती, पोते सब एक साथ रहते है। परिवार के सभी सदस्य कुछ न कुछ अर्जन करते है। कोई अधिक कमाता है तो कोई कम। परन्तु यदि संयुक्त परिवार है तो परिवार में किसी भी व्यक्ति को कोई कठिनाई नहीं होने पाती। इसका कारण यह है कि जो अधिक अर्जन करता है उसका सहयोग पूरे परिवार के साथ रहता है। इस कारण से परिवार के सभी सदस्यों का कार्य आसानी से चलता रहता है। किन्तु आजकल देखा यह जा रहा है कि न्यूक्लियर फेमिली अर्थात् छोटे परिवार का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। छोटा परिवार हमारी संस्कृति के अनुकूल नहीं है। यह पाश्चात्य सभ्यता की देन और प्रभाव है। जैसे पाश्चात्य देशों में पति–पत्नि और बच्चे ही परिवार के सदस्य होते है। जैसे ही बच्चा बड़ा होता है विवाह करके वह अपने परिवार को लेकर अलग हो जाता है। यही प्रथा आजकल अपने देश में भी देखी जा रही है। जैसे ही बच्चे की शादी हुई, वह अपनी पत्नी को लेकर अलग राह अपना लेता है। वह यह सोचता है कि मेरे द्वारा कमाया गया पैसा केवल पत्नी और बच्चे पर ही खर्च हो। यह सोच ठीक नहीं है जिस माता–पिता ने बच्चों को अनेक कष्ट सहकर पाल–पोषकर बड़ा किये है, उनकी भी कुछ अपेक्षाएं होती है। किन्तु जैसे ही बच्चा अपने पांव पर खड़ा हुआ वह अपने को परिवार से अलग मानने लगता है और अपने को

परिवार से अलग कर लेता है। भारत देश में वसुधैव कुटुम्बकम् का सूत्र बहुत प्राचीन है। केवल पारिवारिक सदस्य ही नहीं बल्कि और अन्य लोग भी यदि आ जाये तो हमारे देश में उनका स्वागत और सत्कार हुआ है। अनेक विदेशी आक्रांता आकर यही पर रह गये और भारतीय संस्कृति में समा गये। टूटते परिवार या छोटे परिवार या न्यूक्लियर फेमिली होने का मुख्य कारण क्या है इस पर भी विचार करना आवश्यक है। इसमें जो मुख्य कारण दिखायी देता है वह है असहनशीलता। आज का मानव इतना असहनशील हो गया है कि वह किसी की बात को सहना ही नहीं चाहता। परिवार में माता–पिता या अन्य श्रेष्ठ लोग यदि बच्चे को उसके किसी आचरण के लिए कुछ सुझाव देते है या उसको डाटते है तो बच्चा इसको अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल मानता है। जबकि उनका उद्देश्य यह होता है कि बच्चे में संस्कार आवे और उसके बुरे विचार दूर हो। पहले परिवार के बुजुर्ग या श्रेष्ठ लोग किसी को कुछ कह देते थे तो सभी उनकी बात का आदर करते थे। उनकी बात का विरोध करने का साहस किसी में नहीं रहता था। इसलिए परिवार संयुक्त रूप से बना रहता था और प्रगति करता था। परिवार के टूटने का दूसरा मुख्य कारण है त्याग की भावना का अभाव। आजकल परिवार के सदस्यों में त्याग की भावना का अभाव दिखाई देता है। एक मां–बाप के यदि चार लड़के हैं तो चारों यदि शादी–शुदा है तो उन चारों की राह अलग–अलग रहेगी। सभी केवल अपनी पत्नी और बच्चे के बारे में ही अधिक सोचते है। पत्नी एक दूसरे के घर से आकर परिवार के माहौल को देखकर परिवार में एड्जेस्ट होती है। हो सकता है कि बड़े परिवार में सबको अधिक सुविधाएं न मिल सके किन्तु यदि त्याग की भावना रहे तो सबका भरण–पोषण आसानी से और अच्छे ढ़ंग से हो सकता है। परिवार के टूटने का तीसरा मुख्य कारण आवश्यकता की अधिकता है। धीरे–धीरे मनुष्यों की आवश्यकताएं बढ़ती जा रही है। पहले लोग सीमि आवश्यकता में ही अपना जीवनयापन कर देते थे। एक या दो जोड़ी कपड़े में एक दो वर्ष व्यतीत कर देते थे। किन्तु आज एक व्यक्ति के पास उतने कपड़े रहते है जितना पहले पूरे परिवार में संभव नहीं था। खान–पान, रहन–सहन, आडम्बर और दुनिया की चकाचौंध ने लोगों को ऐसा आकर्षित किया है कि उनकी आवश्यकताएं बढ़ गयी है। आजकल टूटते परिवार का अहंकार की लड़ाई भी मुख्य कारण है। परिवार में अनेक व्यक्ति रहते है। यह स्वाभाविक है कि कोई बात किसी

को अच्छी लग सकती है और कोई बात किसी को बुरी। सभी को सापेक्षता की नीति अपनानी चाहिए। अंहकार की यह लड़ाई परिवार में विखंडन का प्रमुख कारण बन जाती है। यह पहले तो औरतों में शुरू होती है और धीरे–धीरे फैलकर पुरुषों में भी व्याप्त हो जाती है। कोई किसी को सहने के लिए तैयार नहीं रहता। माता–पिता के समझाने के बावजुद भी बच्चे समझने के लिए तैयार नहीं रहते। अतः जहां अहंकार की टकराहट हुई, परिवार विखंडित हुआ। परिवार में आजकल सामूहिकता की भावना का अभाव दिखाई देता है। परिवार में जो धन कमाता है वह अपने बच्चे और पत्नी को अधिक महत्व देता है। जो खेती के काम में लगा रहता है वह कितना परिश्रम करे उसका महत्व उतना नहीं होता। परिवार का बिखराव आधुनिक सभ्यता की देन है।